



बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)

**Banda University of Agriculture & Technology,
Banda- 210001 (U.P.)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Weather Based Agro-Advisory Bulletin No.:124/2025) Year: 7th

जिला: बाँदा

जारी करने की तिथि: 15/2/2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	<ul style="list-style-type: none">➤ खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें।➤ पिछेती उत्पाद हेतु टमाटर, बैंगन व मिर्च की रोपाई करें।➤ प्याज व लहसुन फसलों में पोषक तत्व एवं नमी प्रबंधन करें।➤ भिंडी, चौलाई, कुल्फ़ा, लौकी, कद्दू, तरोई, खीरा, करेला, लोबिया की बुआई करना प्रारंभ कर दें।➤ मिर्च, टमाटर, मिर्च, लहसुन, गोभी वर्गीय सब्जियों में माहू आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	<p>शस्य-प्रबंधन</p> <ul style="list-style-type: none">➤ इस समय बढ़ते तापमान के दृष्टिगत गेहूँ की फसल में समय समय पर पानी लगाना आवश्यक है! फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निश्चित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है।➤ दिन के बढ़ते तापमान के कारण होने वाले नुक्सान से बचने के लिए किसानों को पोटेशियम नाईट्रेट का १-२ प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।➤ समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वताके करीब है ! इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए ।➤ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें।➤ इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी०ए०पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए । बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है।➤ इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथा स्थान दिया जा सकता है। बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है।➤ १ किग्रा बीज के लिए ४ ग्राम राईजोबियम कल्चर या ४-६ मिली तरल राईजोबियम को १० प्रतिशत गुड़ के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें! उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें। <p>मृदा-प्रबंधन</p> <ul style="list-style-type: none">➤ जिन फसलों में बाली ;जैसे गेहूँ एवं फली ;जैसे चना, मटर एवं मसूर) बन चुकी हो उसमें नत्रजन धारी उर्वरक जैसे यूरिया का प्रयोग कदापि न करें ।

		<ul style="list-style-type: none"> ➤ फसलों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखने पर छरूकूज़ ,19रू19रू19रू का छिड़काव 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से करें।
3-	पशुपालन प्रबंधन	<p>सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय निम्न सावधानियाँ मुर्गी पालकों को बरतनी चाहिए –</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय विशेषकर चूजों को ठण्ड से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। उन्हें उनके शेड में कृत्रिम गर्मी प्रदान करने की व्यवस्था अंगीठी, कोयला, हीटर, पेट्रोलियम गैस इत्यादि माध्यम से करनी चाहिए। ➤ ब्रूडर का तापमान सामान्यतः 30 डिग्री सेल्सियस तक रखना चाहिए जिससे चूजे ठण्ड से बचे रहें। चूजों के ब्रूडर में आने से कम से कम 2-4 घंटे पहले ही ब्रूडर चालु कर देना चाहिए। ➤ जाड़े के मौसम में चूजों को ठण्ड लगने से सर्दी खांसी की बीमारी होने का डर रहता है, ऐसे मौसम में मुर्गियों को विटामिन मिनरल मिश्रण प्रदान करना चाहिए जिससे मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी व ठण्ड से लड़ने की शक्ति मिलेगी। ➤ सर्दियों के मौसम में मुर्गियों के आरामदायक आवास की व्यवस्था भी अत्यंत आवश्यक है। जाड़े में कम से कम 6 इंच की अच्छी गुडवत्ता पूर्ण विछावन मुर्गी घर के अंदर विछावें, अच्छी विछावन मुर्गियों को फर्श की ठण्ड से बचाता है तथा तापमान भी नियंत्रित करता है।
4-	कीट-प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ राई/सरसों में माँहू के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600-700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे परभक्षी कीटों व मित्र कीटों का संरक्षण किया जा सके। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु फ्लोनीकोमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➤ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रेप प्रति हे0 की दर से खेत में लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250-300 मिली0 300-400 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600-700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➤ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्बडा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा फ्लोनीकोमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➤ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैंगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना

		<p>चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे० की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी०टी०) 1.0 किग्रा० प्रति हे० की दर से 400–500 ली० पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू० जी० 3 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु फलोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस०सी० 2 मिली० प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	पादप रोग प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ सरसों या अन्य किसी फसल में चूर्णिल आसिता रोग के नियंत्रण हेतु सल्फेक्स 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से रोग के लक्षण दिखाई देने के तुरन्त बाद तथा 2 छिड़काव 10 दिनों के अन्तर पर करें। ➤ सरसों और अलसी में अल्टरनेरिया पर्ण चित्ती रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैकोजेब, की 2.5 ग्राम प्रति लीटर की मात्रा का प्रथम छिड़काव तथा 15 दिनों के अन्तर पर दो अन्य छिड़काव अथवा प्रोपिकोनाजोल या हेक्साकोनाजोल की 0.5 मिलीलीटर मात्रा का प्रतिलीटर पानी की दर से प्रथम छिड़काव रोग के लक्षण उत्पन्न होने के बाद तथा दो छिड़काव 15 दिनों के अन्तर पर करें। ➤ घेत फफोला और मृदरोमिल आसिता रोग रोग के नियंत्रण हेतु रिडोमिल एम. जेड कवकनाषी का प्रयोग 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पत्तियों पर घेत फफोले और मृदरोमिल आसिता रोग दिखाई देते ही करें तथा दो छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करें। ➤ गेहूँ और जौ का स्पार्ट ब्लोच या झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल के 0.1 प्रतिशत जलीय घोल का छिड़काव रोग के लक्षण प्रकट होते समय तथा दो अन्य छिड़काव रोग बढ़ने की अवस्था में करें। ➤ सफेद मक्खी द्वारा फैलने विषाणुओं के लिये 3 मिलीलीटर डाइमेथोपेट प्रति लीटर जल में तथा डेमिक्रान एवं नुवान की 1 मिलीलीटर मात्रा 3 लीटर जल की दर से धोल बनाकर छिड़काव करें। ➤
6.	बागवानी प्रबंधन	<p>फरवरी यानी माघ–फाल्गुन माह में भी वातावरण ठंडा होता है परन्तु जनवरी माह की तुलना में तापक्रम अधिक होता है। गर्मी का थोड़ा आभास होने लगता है। वायुगति बढ़ जाती है और सापेक्ष आद्रता बीते माह की अपेक्षा कम हो जाती है। माह के दूसरे पखवाड़े से मौसम सुहाना होने लगता है। औसतन अधिकतम एवं न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 28.8 एवं 12.5 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। फरवरी माह के दौरान उद्यान फसलों में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख समसामयिक कृषि कार्यों का विवरण निम्नवत है –</p> <p>आम में मुख्य कृषि कार्य</p>

- इस समय आम के पेड़ पर फूल व फल आना शुरू हो जाता है। छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2,4-डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करना चाहिए।
- आम में चुर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति 1 लीटर के हिसाब से घुलनशील गंधक का छिड़काव करें। आम में यदि पुष्प कुरुपता दिखाई दे रही है तो गुच्छों को तुरंत काटकर नष्ट कर दें।
- श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) इस रोग की उग्रता की स्थिति में पत्तों एवं बढ़ते फलों पर इंडोफिल एम-45 नामक फफूंदनाशी (0.2%) का 2-3 छिड़काव करना चाहिए। रोग ग्रसित टहनियों तथा इसके प्रभाव से झड़े पत्तों को जलाना या गाड़ देना लाभकारी होता है।
- फफूंद जनित पिंक रोग के कारण पूर्ण विकसित पेड़ों की टहनियां एक दृएक करके सूखने लगती हैं। इसके नियंत्रण के लिए सूखी टहनियों को 15 से.मी. नीचे से छांट कर उसके कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए तथा इसमें फफूंदनाशी का 2-3 छिड़काव करना चाहिए।
- आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1.0 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पपीता में मुख्य कृषि कार्य

- पपीता में तना गलन रोग के कारण भूमि की सतह से तना सडना शुरू हो जाता है। पौधा गिर जाता है।
- इस रोग से बचाव के लिए पानी का निकास ठीक करें तथा कॅप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

शरीफा (सीताफल) में मुख्य कृषि कार्य

- शरीफा जिसे सीताफल भी कहा जाता है। सीताफल में स्केल कीट टहनियां व फूलों का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाता है।
- इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलाएं। पेड़ पर डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

नींबू में मुख्य कृषि कार्य

- नींबू में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियां, पत्तियां व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं।
- इसके नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइकिलिन 100 मिलीग्राम व ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नींबू के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें।
- वायरस को फैलाने वाले कीड़ों के नियंत्रण का समुचित प्रबंध करें। इसके लिए नये कल्ले निकलते समय इमिडाक्लोप्रिड (3 मिली.10 ली.) या डाइमिथोएट (15 मिली.10 ली.) का घोल बनाकर दो-दो छिड़काव एकान्तर विधि से करें।
- किन्नो,संतरा व नींबू आदि फल वृक्षों में फूल एवं फल लगना प्रारंभ हो जाता है। इन पौधों के थालों की गुड़ाई कर खाद-उर्वरक डालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

7.	वानिकी प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात पौधों की सिंचाई करें। ➤ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➤ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें।
----	-----------------------	--

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल-

<ol style="list-style-type: none"> 1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे 	<ol style="list-style-type: none"> 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
--	--